[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3410

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मध्यप्रदेश में तबला वादन में आये परिवर्तनों का अध्ययन

डॉ. राहुल स्वर्णकार
सहा. प्राध्यापक (संगीत)
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

तबला एकल वादन में दो महत्वपूर्ण पक्ष माने जाते हैं :–

(1) ध्वनि प्रधान तबला
इसके अंतर्गत तबले की तासीर एवं अपनी कल्पना शक्तियों को जीवंत रूप देने के लिए वादक कई तरह के नए प्रयोग ध्वनि के सम्बंध में करते हैं जिसका मुख्य कारण आधुनिक समय की सुविधाएँ जैसे माइक्रोफोन, स्पीकर आदि हैं। इनकी ध्वनि विस्तार क्षमता के अनुरूप ही अपनी वादन सामग्री को नियंत्रित करके प्रदर्शित किया जाता है जो आज के युग की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

(2) अकादमिक प्रधान तबला
इसके अंतर्गत तबले की वादन सामग्री निर्धारित साहित्य एवं शास्त्र के अनुसार प्रयोग की जाती है। इस शैली में बंधनों का जोर होता है तथा स्वतंत्रता का अभाव। यह शैली प्रारंभिक शिक्षा से लेकर आगे तक भी जारी रहती है। समय के साथ–साथ यह शैली ज्ञान के अनुसार बढ़ती रहती है। इस तरह का तबला हमारी पुरानी पीढ़ियाँ बजाती आ रही हैं। [1]

आज के युग में इन दोनों शैलियों का प्रयोग बड़ी ही सुंदरता एवं रोचकता के साथ हमारे वादक कर रहे हैं और आज के श्रोताओं एवं संगीत समाज की मांग भी यही है। बड़ी विडम्बना की बात यह है कि हमारे पूर्वजों के पास ये तकनीकें उपलब्ध नहीं थीं अन्यथा पुरानी तासीर के लोगों का वादन कितनी ऊँचाई पर पहुँच गया होता जहाँ आज उनकी परम्परा को हम कुछ अंश तक ही प्रयोग कर पा रहे हैं।

मध्यप्रदेश में तबले को पूर्ण रूप से बाहरी ही माना गया है। यदि कोई वादक बाहर से आते थे तभी उनका एकल वादन प्रस्तुत किया जाता था।

वर्तमान समय में प्रदेश में तबले के प्रति लोगों का रूझान काफी बढ़ गया है। एकल वादन भी काफी प्रचार में आ गया है। किंतु फिर भी तबला वादकों की पहचान उनके वादन के अनुसार केवल संगत में ही आंकी जाती है।

1978 के आसपास मध्यप्रदेश में शास्त्रीय संगीत का कोई प्रचार–प्रसार नहीं था, न ही प्रशासनिक तौर पर किसी संस्था की स्थापना हुई थी। उस समय प्रदेश के कलाकारों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी तथा सागर के निवासी श्री अशोक वाजपेयी जी पहली बार जब सन् 1973 में अपनी पदस्थापना पर भोपाल आए तो उन्होंने प्रदेश की सांगीतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर का विस्तार करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने सन् 1979–80 में कला परिसर, उस्ताद अलाउद्दीन खाँ अकादमी और भारत भवन जैसी अभूतपूर्व संस्थाओं की नींव रखी और 1973 में लाल परेड ग्राउंड, भोपाल में एक बहुत बड़े जलसे का आयोजन किया जिसमें प्रदेश एवं देश के शीर्ष कलाकारों की प्रस्तुतियाँ आयोजित की गईं [2]

मध्यप्रदेश में दद्दू खाँ, हलीम खाँ जावरे वाले (निज़ामुद्दीन खाँ के पिता), बाबू खाँ, सरवत हुसैन आदि ऐसे कलाकार हैं जिनसे प्रदेश की वादन परम्परा प्रारम्भ हुई। तबला एकल वादन की शुरूआत चार धाराओं से मानी जा सकती है। पहला तवायफों के कोठों से, दूसरा आकाशवाणी, तीसरा राजदरबार और चौथा गम्मदों से क्योंकि भारत का कोई भी तबला वादक ऐसा नहीं है जो कभी न कभी तवायफों के कोठों पर सीखने न गया हो।[3]

तबला एक शायरी की तरह है जिसमें कायदों के बोलों के आधार पर नियम, खाली भरी, कायदों के बल को एक निश्चित जगह रखा गया है। इसी क्रम में एक के बाद एक कायदे बनते चले गये। पहले पेशकार, कायदा, रेले, गत, परनों का वादन एक क्रमबद्ध तरीके से होता था। यह सम्भव नहीं कि कुछ भी कही पर बजाया जाए और यही विकास की नीव है। कठिन

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कठिन तालें बजाई जातीं थीं जैसे 11, 13, 17 मात्रा आदि में वादन चलता था जिसका पारिश्रमिक 50 पैसे या 1 रूपया था पंरन्तु गाना बजाना उच्चस्तरीय था।

फ्यूजन के जरिये आज विश्व संगीत के लोग हमारे कलाकारों को साथ मे वादन हेतु आमंत्रित करते हैं। हमारे कलाकर उनके कलाकरों के साथ गा भी रहे हैं और बजा भी रहे हैं पर प्रचार भारतीय शास्त्रीय संगीत का ही कर रहे हैं जिसमें हम अपना घराना भी बता रहे हैं साथ ही थिरकवा खाँ और अमीर हुसैन साहब को भी याद कर रहे हैं।

एकल वादन में पहले पांच मिनिट में ही पता चल जाता है कि लोगों का टेस्ट क्या है जिसे ध्यान में रखना बहुत जरूरी है। अगर पेशकार में कोई अच्छी बात लेकर आने पर श्रोताओं द्वारा वाहवाही मिलती है तो वही सिलसिला चल निकलता है अथवा तुंरन्त अपनी शैली को बदलकर बजा रहे है जो तुरन्त श्रोताओं पर अपना असर छोड़े।

आज एकल वादन केवल 20 अथवा 40 मिनिट का ही होता है। पहले घंटो यह बात चलती थी। अमीर हुसैन साहब या और अन्य बडे कलाकार यह कहते थे कि कायदे मे अगर एक बल अगर दो बार बज जाये तो अंगुली पकड़ लेना। उस समय इस प्रकार का वादन होता था। आज तो सबक का तबला रहा ही नहीं है।[4]

तबला वादन में पहले कायदे, मुखड़े, टुकड़े, गतें आदि बजाना ही शैली थी । बाद में जब थिरकवा खाँ जैसे विद्वान आये तो उन्होंने विषेष रूप से पेषकार में काम किया। वास्तव में ये कायदा का ही स्वरूप है। उस जमाने में एकल वादन कभी नोटेषन से नही सिखाते थे, कभी लिखने का काम नहीं हुआ। किताबें या तो दिल्ली या फिर महाराष्ट्र से प्रकाशित हुई। मध्यकाल के लोगों ने पहले कोई खास साहित्य का सृजन नहीं किया। अधिकतर साहित्य या तो दिल्ली या फिर महाराष्ट्र में रहा है। इसीलिये म.प्र. की शैली या परंपरा के बारे में साहित्य में विषेष योगदान नहीं रहा। म. प्र. में घरानेदार तबला आने से पहले मूल रूप से जो बोल बजाये जाते थे वे कम शास्त्र सम्मत होते थे और बोल भी लोक संगीत के काफी नजदीक थे। बाद में शास्त्र एवं घराना आने के बाद लोगों ने कई कायदे इज़ाद कर दिये। [5]

भोपाल में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व से लेकर पश्चात् तक किसी भी घराने या रियासत में तबला वादन के विद्वानों का कोई विवरण प्राप्त नहीं होता है। यहाँ केवल कव्वालियों का प्रचलन था जिसमें डफ जैसे एक लोक वाद्य को लेकर उसका वादन किया जाता था।[6]

मध्यप्रदेश में तबला या पखावज मुख्य रूप से ग्वालियर, दतिया, इंदौर, उज्जैन, आदि रियासतों में प्रचलित था। यहाँ प्रमुख रूप से ग्वालियर में संगीत का घराना बना जिसे गायकी का घराना घोषित किया गया। परंतु तबले के क्षेत्र में कोई घराना स्वीकार्य नहीं किया गया। तबला वादकों को हेय दृष्टि से देखा गया एवं उनके सीधेपन का फायदा उठाया गया इसीलिए उन्हें उतना महत्त्व नहीं मिल पाया जितना अन्य विधाओं को दिया गया। जबकि तात्कालिक समय (गायकी के घराना बनने के समय) में तबला एवं पखावज भी अपने चर्मोत्कर्ष पर था। मुख्यरूप से ग्वालियर के तबले की शैली पर पखावज अंग का प्रभाव वृहद रूप से पड़ा क्योंकि दतिया एवं ग्वालियर में पखावज के सिद्धहस्त एवं देवता तुल्य वादक श्री कोदऊ सिंह एवं श्री पर्वत सिंह जी की वादन शैली प्रमुख रूप से पखावज की थी। इसी कारण कालांतर में प्रदेश के बड़े एवं सिद्धहस्त वादक कहीं न कहीं इन्हीं विद्वानों की शैली से जुड़े हुए हैं। परंतु फिर भी जिन लोगों ने विधिवत शिक्षा प्राप्त की है वे ही शुद्ध रूप से ग्वालियर की शैली को बचाए हुए हैं। साथ ही अपनी शैली को पखावज एवं तबले के मिश्रित बोलों से हलका एवं जोरदार दोनों तरीके से विकसित करते जा रहे हैं।

अब लोग बनाये गये घरानों की बंदिषों को कम सुनते है तथा छोटी छोटी तिहाइयों तथा लग्गियों का प्रचार अधिक हो चुका है। तथा उनकी रुचि भी अब बदल चुकी है। शैलियाँ बरकरार नहीं हैं। आज कलाकार घरानों की विषेषताओं पर कम तथा तैयारी पर विषेष ध्यान देते हैं। इसीलिये अब घरानों की चीजों के साथ ही चपलता वाली बंदिशों, लग्गियों तथा द्रुत लय का प्रभाव अधिक हो चुका है।[7]

आज वैज्ञानिक कसौटी और शिक्षा पर तौलकर तबले को लोग बजाते है। लिखित तौर पर षिक्षा का दौर बढ़ गया है। 10 प्रतिशत लोग ही घराने से बजा रहे हैं 90 प्रतिषत लोग अपनी अपनी पसंद से बजा रहे हैं। उठान बजाना आम बात हो गई है पहले उठान बनारस को छोड़कर कहीं नहीं बजाते थे। कठिन तालों पर सिद्ध होना विद्ववता का पर्याय हो गया है।[8]

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

होलकर रियासत में उस्ताद जहाँगीर ख़ाँ अपनी 40 वर्ष की अवस्था में इन्दौर आए। उनका जन्म 1869 वर्ष का था और 1911 में इन्दौर आये और 107 वर्ष तक वादन किया। 67 वर्ष तक इंदौर में रहे। इनके अलावा पानसे घराने के गुनिजन पखावज के साथ–साथ तबले पर भी पूर्ण अधिकार रखते थे स्व. पंड़ित श्री नाना साहब पानसे स्वयं एक उच्चकोटि के तबला वादक भी थे। उन्होंने पखावज के बोलों को तबले पर बजाने के लिए स्वयं की हस्तलिखित पोथी भी तैयार की जो आज भी स्व. श्री लक्ष्मीनारायण पवार के पास धरोहर के रूप में रखी है। जिसमें प्रत्येक बोल को तबला एवं पखावज पर बजाने की रीति स्पष्ट रूप से लिखी हुई है।

आज तबला वादन में अनाघात का प्रयोग अधिक होता है। शुरूआत से पेशकार से लेकर कायदे, रेले, गतें चक्रदार, सारी चीजें अनाघात से बनाई जाने लगी है। बोलों को क्लिष्ट बनाकर सीधी बंदिशों को और कठिन बनाकर प्रयोग किया जा रहा है। चीजें वही हैं बस अंदाज में परिवर्तन हो गया है। जैसे पहले 16 मात्रा में बंदिशें सीधी–सीधी छंदों की अधिक होती थी। 4+4+4+4 मात्राओं की परंतु अब मात्राओं को तोडकर 5+3+3+5 या 10+6या 9+7या 2.5+2.5+4+7 इस तरह के कठिन छंदों को आधार मानकर बंदिशों की रचनायें की जाने लगी हैं। [10]

कुछ निश्चित बोलों से युक्त चक्रदार को उनके स्वरूप में परिवर्तन करते हुए किसी भी ताल में बनाकर प्रयोग किया जाने लगा है। बंदिशों में उनके मूल स्वरूप को परिवर्तित न करते हुए तथा उसकी सुंदरता को नष्ट न करते हुए इस तरह के प्रयोग चारों तरफ देखने को मिल जाते हैं। बदिशों के लिये हर तरह की रचनाओं के लिये एक निश्चित लय निर्धारित की गई है। अगर उस लय से ऊपर हम उन्हें बजाते हैं तो उस बंदिश की विशेषता, बोलों की काट–छाँट उसकी पहचान नष्ट हो जाती है। पहले राजाश्रय साधन था इसके लिये विद्वान होना ही एक रास्ता था तभी राजा के यहाँ नौकरी मिलती थी अब शिक्षा के परिवर्तित दौर में वही तबलिया उच्च श्रेणी का है जिसके पास योग्यता के साथ डिग्रियाँ भी हों। आज वही तबला वादक अपनी विद्या को आगे बढ़ा रहा है एवं प्रसिद्धी पा रहा है जो शासन के द्वारा कहीं न कहीं नौकरी पा गया है, चाहे वह संगीत की नौकरी हो या फिर किसी अन्य क्षेत्र की।

पहले आकाशवाणी में ए ग्रेड बी हाई ग्रेड के लिए तबला वादन की रिकार्डिग होती थी परंतु आज केवल ए ग्रेड को ही एकल वादन की रिकार्डिग की जाती है। पहले ए ग्रेड बी हाई ग्रेड की जुगलबंदी रिर्काड की जाती थी एक साथ बजाने का मौका दिया जाता है। म.प्र. में जलसों का आयोजन किया जाता था। जिसे लोग सुनने के लिये बड़ी दूर–दूर से आते थे। खड़े होने के लिये भी जगह नहीं होती थी। इंदौर में गॉधी मैदान, राजवाडे में बड़े–बडे लोग बजाने आते थे तथा महाराजा होलकर अपने गले के हार दे दिया करते थे।

पहले लोग बंदिशों को कथाओं पर बजाये जोडकर बजाते थे उसी तरह के बोल पखावज पर बजाये जाते थे जैसे शिवपरन,गणेश परने ,दुर्गापरन कथाएँ आज भी हैं फर्क सिर्फ इतना सा है कि अब बंदिशें दोस्तों की लडाई झडप वाहनों की आवाज बारिश का अंदाज रेल,हवाई जहाज की आवाज पर आधारित हो गया है परन्तु बंदिशो का आधार उनकी शास्त्रीय आज भी उतनी ही बरकरार है जितनी पहले समय मे थी।[11]

संदर्भ –

1 *पंडित किरण देशपांडे (भोपाल) से प्राप्त साक्षात्कार*
2 *पंडित ओम प्रकाश चौरसिया से प्राप्त साक्षात्कार*
3 *श्री अजय सिंह सोलंकी (भोपाल) से प्राप्त साक्षात्कार*
4 *उस्ताद सलीम अल्लाह वाले (भोपाल) से प्राप्त साक्षात्कार*
5 *श्री दिनकर मजुमदार जी (इन्दौर) से प्राप्त साक्षात्कार*
6 *उस्ताद सरवत हुसैन जी से प्राप्त साक्षात्कार*
7 *पं. रामस्वरूप रतौनिया ग्वालियर से प्राप्त साक्षात्कार*
8 *उल्लास राजहंस, (इंदौर) से प्राप्त साक्षात्कार*
9 *स्व.पंडित लक्ष्मीनारायण पवार जी (इंदौर) से प्राप्त साक्षात्कार*
10 *हितेन्द्र दीक्षित (इंदौर) से लिए साक्षात्कार*
11 *श्री अरूण धर्माधिकारी ग्वालियर द्वारा प्राप्त साक्षात्कार*